भूमिका

भारत विविधताओं वाला राष्ट्र हैं। भारतीय परंपरा, भारतीय दर्शन, भारतीय तत्व ज्ञान आदि वैश्विक आकर्षण के केद्र रहे हैं। भारतीय संस्कृति का इतिहास प्राचीनतम रहा हैं । भारतीय कला, साहित्य, भाषा, संगीत आदि पर अध्ययन व्यापक रूप में हो रहा हैं । इस अध्ययन में विद्यमान लोक कला और लोक साहित्य का स्वतंत्र और सूक्ष्म अध्ययन हमारे ज्ञान लालसा को अधिक तीव्र करते हैं।

विविध प्रदेशों में विकसित लोक कलाओं और उनके विविध आयामों का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय बन गया हैं । भारत के विविध प्रदेशों में विद्यमान लोक कला को समझना और उनके विकास के लिए सहायक अंगो का अध्ययन करने के लिए भारतीय संस्कृति मंत्रालय बढ़ावा देता हैं । कला का छात्र होने के नाते तथा अपने प्रदेश महाराष्ट्र की संस्कृति के प्रति उत्तरदायी होने के कारण मुझे यहाँ के लोक कलाओं में संगीत एवं वाद्यों की भूमिका समझने की आवश्यकता महसूस हुई। अतः मैंने मराठी लोककला संस्कृति का परिचय इस लघु शोध प्रबंध के माध्यम देने का सूक्ष्म प्रयास किया हैं ।

महाराष्ट्र भारत का प्रागितिशील संस्कृति संपन्न राज्य हैं । महाराष्ट्र के सांस्कृतिक इतिहास में नाटकों का अतुलनीय योगदान रहा हैं । महाराष्ट्र में नाटक की परंपरा पश्चिम बंगाल के समान अत्यंत विकसित मानी जाती हैं । महाराष्ट्र का साहित्य नाटकों से संपन्न हैं , जिस तरह नाटक यहाँ के संस्कृति का प्रतीक हैं उसी तरह लोक कला और लोकनाट्ययहाँ के जीवन का अभिन्न अंग हैं । इन लोक कलाओं और लोकनाट्यों का अनेक विद्वानों ने अध्ययन और विश्लेषण किया हैं । उसमें रा. चि. ढेरे, प्रभाकर मांडे, प्रकाश खांडगे, शरद चंद्र व्यवहारे आदि विचारकों का योगदान अमूल्य रहा हैं लेकिन लोकनाट्यऔर उसकी संगीत पद्धति को स्वतंत्र रूप में अध्ययन आज तक हो नहीं पाया।

संगीत और संगीत वाद्यों का लोक नाटकों में होने वाला प्रयोग और उसकी भूमिका का अध्ययन इस विचार को केंद्र में रखकर लोक नाट्यों की संगीत पद्धति और लोक वाद्यों का अध्ययन

शोध के लिए निर्धारित कर महाराष्ट्र के लोकनाट्यों की संगीत पद्धति को समझने की चेष्टा हमने इस शोध के माध्यम से की हैं ।

महाराष्ट्र में संगीत नाटक की परंपरा विष्णुदास भावे यानि 1843 से शुरू होती हैं । इस परंपरा का अध्ययन और विश्लेषण अनेक विद्वानों ने किया हैं , लेकिन लोकनाट्यों के संगीत पर बहुत कम विद्वानों ने प्रकाश डाला हैं । हमने महाराष्ट्र के लोकनाट्यों की इस अनछुई इकाई को अपने अध्ययन का विषय बनाकर इस शोध प्रबंध को प्रस्तुत करने की चेष्टा की हैं ।

महाराष्ट्र में प्रचलित लोकनाट्यों में गोंधल, वाघ्या-मुरली, कीर्तन, पोतराज आदि विधि नाट्य तथा तमाशा, पवाड़ा, लावणी, पोवाड़ा आदि रंजन प्रधान लोकनाट्यहैं । इन लोकनाट्यों में नृत्य संगीत, गीत संगीत, वाद्य संगीत की अहम भूमिका होती हैं । लोक गीतों को गाने की एक विशिष्ट पद्धति इन लोक नाटकों में देखने को मिलती हैं । महाराष्ट्र के उपयोजित गीत लोकजीवन को प्रतिबिम्बित करते हैं। इनकी शब्द रचना, स्वर रचना सरल सुंदर तथा मधुर होती हैं किन्तु शास्त्रीयता का अभाव होता हैं ।

लोकनाट्यों के विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न प्रस्तुत शोध में किया गया हैं । लोकनाट्यों का संगीत वाद्य हमारे विषय निर्धारण में आकर्षण का केंद्र रहा हैं । लोकनाट्यों में उनके उपयोग को देखते हुए हमनें महाराष्ट्र के विशेष संदर्भ में लोक वाद्यों का गहनत अध्ययन करने का प्रयत्न किया हैं ।

सम्पूर्ण शोध को चार भागों में विभक्त किया गया हैं -

1. **महाराष्ट्र का सांस्कृतिक इतिहास और लोकनाट्य:-** इस अध्याय में महाराष्ट्र के सांस्कृतिक इतिहास का तथा उसकी पृष्ठभूमि में उद्भित लोकनाट्यों का संक्षिप्त परिचय दिया गया हैं ।
2. **नाट्य संगीत का स्वरूप एवं विशेषताएँ:-** इस अध्याय में नाट्य संगीत की अवधारणा तथा स्वरूप पर विशेष ध्यान दिया गया हैं ।

3. **महाराष्ट्र के लोक नाट्यों की संगीत पद्धति :-** प्रस्तुत अध्याय में महाराष्ट्र में प्रचलित लोक नाट्यों में से कुछ प्रमुख विधि नाट्य तथा रंजन प्रधान नाटकों की संगीत पद्धति पर प्रकाश डाला गया हैं ।
4. **महाराष्ट्र के लोक नाट्यों के संगीत वाद्य :-** प्रस्तुत अध्याय में महाराष्ट्र के लोक नाट्यों में प्रयोग किए जाने वाले लोकवाद्यों का अध्ययन किया गया गया हैं ।

शोध में क्षेत्र सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। साथ ही प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग करते हुए वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि का सहारा लिया गया।

शोध के मार्गदर्शक डॉ ओमप्रकाश भारती जी का आभार देना चाहता हूँ जिन्होने शोध संबन्धित मेरी जिज्ञासा को शांत किया तथा विषय के पहलुओं पर चर्चा की। साथ ही नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन के विभागाध्यक्ष माननीय प्रोफेसर सुरेश शर्मा जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने मुझे इस विषय पर कार्य करने की अनुमति प्रदान की। विभाग के ही अन्य शिक्षकों डॉ सतीश पावड़े, डॉ विधु खरे का विशेष आभार देना चाहता हूँ जिन्होने इस विषय पर मेरा मार्गदर्शन किया।

महाराष्ट्र के संगीत पद्धति को समझने में श्री प्रकाश खांडगे, डॉ शशिकांत बरहानपुरकर जी ने विशेष सहयोग दिया उनके प्रति में कृतज्ञ हूँ।

अंत में कुमार गौरव, मनीष कुमार, अमोल अढ़ाऊ,संतोष यादव सहपाठियों तथा वरिष्ठ मित्रों में सुनीता, सुरभि, डॉ अश्वनी कुमार जी, भागवत जी का आभार देना चाहता हूँ, जिन्होने समय समय पर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से शोध संबन्धित सहायत की।

उपसंहार

महाराष्ट्र में लोक नाट्यों की बहुरंगी उन्नत परंपरा रही हैं । भारत के विभिन्न अंचलों व क्षेत्रों के अनुरूप लोक नृत्यों, लोक संगीत, लोक वाद्यों में विभिन्नता देखने को मिलती हैं । महाराष्ट्र के लोकनाट्यों में यह लक्षण प्रमुखता से दिखता हैं ।महाराष्ट्र के लोकगीतों, वैदिक ऋचाओं और मंत्रों के उच्चारण में लोक का तत्व स्पष्ट रूप से देखने को मिलता हैं । winternitz (a german scholer on vedic litreture) के मतानुसार "these gaathaas and saamvaadsuktaas (conversational hymns) in vadaswhre prototypes of later folk song, ballads and was the root of further devlop of drama"

महाराष्ट्र में नाटक की परंपरा सुदीर्घ रही हैं साथ ही संगीत नाक्र ने अपनी अलग पहचान सिद्ध की हैं । उसी प्रकार महाराष्ट्र का लोकनाट्यऔर लोक संगीत सम्पूर्ण भारत को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहा हैं । लोक संगीत हमे लोक गीतों और लोकनाट्यों में देखते को मिलते हैं । यह लोकनाट्य विधि नाट्य, रंजन प्रधान नाट्य में वर्गीकृत हैं । इन वर्गीकृत नाट्यों में एक अकृतीबंद स्पष्ट रूप से देखने को मिलता हैं । गन-गवलन-कथा गायन – आख्यान-भैरवी इस आकृति बंदमें संगीत का महत्वपूर्णब स्थान हैं । महाराष्ट्र के लोकनाट्यों में कंठ संगीत, वाद्य संगीत का अपना विशिष्ट महत्व होता हैं , जो नाटक के कथावस्तु के विकास में सहायक होता हैं । महाराष्ट्र का लोकनाट्यसंगीत सरल, मधुर और शास्त्रीयता का अभाव इन विशिष्टताओं के कारण ग्रामीण जनमानस में आज भी अपना अलग महत्व बनाने में सिद्ध हुआ हैं ।

कुछ विधि प्रधान लोकनाट्यों में पारंपरिक रूप से विशिष्ट गायन पद्धति विकसित हो गई हैं, जो गोंधल, वाघ्या मुरली जैसे लोकनाट्यों में मिलती हैं । इसके गायन शैली में परंपरा झलकती हैं और बदलावों का अभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता हैं इसके विपरीत रंजन प्रधान नाटकों में समाज के परिवर्तन के साथ अपने प्रदर्शन में लोक अभिरुचि अनुरूप बदलाव किए हैं । और

पारंपरिक स्वरूप को छोड़ नवीनता ग्रहण कर ली हैं जैसे तमाशा, लावणी आदि लोकनाट्यों की गायन पद्धति में आज भी पारंपरिक रूप देखने को मिलता। रिकार्डेड ध्वनि पर थिरकते कलाकार आज के समाज के अभिरुचि को दर्शाते हैं।

महाराष्ट्र के लोकनाट्यों में जैसे-जैसे बदलाव होता गया वैसे ही उसकी संगीत पद्धति में बदलाव होता चला गया। भूमंडलीकरण के प्रवाह में महाराष्ट्र के लोकनाट्यऔर लोक संगीत कहीं न कहीं अवश्य प्रभावित हुआ हैं । लोकगायक, वादक तथा लोककलाकर अपने अस्तित्व के लिए और आर्थिक सबलता आने के लिए पारंपरिक नाटकों को छोड़ अन्य क्षेत्रों में विस्थापित हो रहे हैं। इसके कारण लोकनाट्य और लोकनाट्य संगीत महाराष्ट्र में कहीं लुप्त न हो जाए। इसलिए एक संवेदनशील एवं कृतिशील अध्ययन की आवश्यकता महाराष्ट्र के लोकनाट्यतथा संगीत पद्धति को बचाने के लिए आवश्यक हैं । हमनें इस लघु शोध प्रबंध में कुछ निष्कर्ष अर्जित किए हैं, उसके कुछ बिन्दु यहाँ स्पष्ट करना आवश्यक हैं ।

1. महाराष्ट्र का लोकनाट्यसंगीत ताल पर आधारित हैं ।
2. लोकनाट्यों में रस भाव आधारित संगीत महत्वपूर्ण होता हैं ।
3. आधुनिक नाट्य संगीत और लोकनाट्यसंगीत इनमें बहुत अंतर हैं ।
4. लोकनाट्यों का संगीत अशास्त्रीय हैं।
5. महाराष्ट्र के लोकनाट्यों में प्रयोग होने वाले संगीत वाद्य मुख्य रूप से घन वाद्य हैं
6. लोकनाट्यों के संगीत का प्रभाव फिल्मी संगीत पर देखने को मिलता हैं ।
7. लोक नाटकों के कलाकार और वादक इनकी स्थिति आर्थिक रूप से दयनीय हैं

संगीत में लोक वाद्य आत्मा तथा शरीर की तरह हैं । लोक वाद्यों की भूमिका इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती हैं क्योंकि संगीत के मूल में वाद्य ही हैं। लोकनाट्यों में इनकी भूमिका अहम होती हैं । सम्पूर्ण भारत के लोक नाटकों में वाद्यों का विशिष्ट स्थान हैं । वाद्यों के ताल के अनुसार कलाकारों के भाव बदलते हैं। वाद्यों से उत्पन्न परिवेश श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करता हैं तथा नाटक के

साथ उसको स्वतःजोड़ देता हैं । इन वाद्यों के निर्माण में ग्रामीण जीवन में प्रयोग होने वाली वस्तुओं का प्रयोग किया जाता हैं । महाराष्ट्र के लोकनाट्यों में संगीत पद्धति का सायोंजन होता हैं । उसके ताल, लय, स्वर, रस तथा अनुभूति श्रोता के अभिरुचि को पूर्ण करता हैं ।

लोकनाट्यों के विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न शोध में किया गया हैं । लोकनाट्यों के संगीत वाद्य हमारे विषय निर्धारण में आकर्षण का केंद्र रहा हैं । लोकनाट्यों में उनके उपयोग को देखते हुए। हमनें उन लोक वाद्यों का अध्ययन महाराष्ट्र के विशेष संदर्भ में गहनता से का करने का प्रयत्न किया हैं।